अश्विका

सपनों और सच्चाई के बीच

देवल यादव

BlueRose ONE .com
Stories Matter
New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Deval Yadav 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-093-4

Cover design: Ajay Dhyani
Typesetting: Sagar

First Edition: April 2026

समर्पण

“Ashvika”
उस अनजानी धड़कन के नाम,
जो कभी पूरी तरह मिट्टी नहीं,
पर कभी बिछड़ी भी नहीं।
उस प्रेम के नाम,
जो शब्दों से परे है,
फिर भी हर पंक्ति में साँस लेता है।

भूमिका

कुछ कहानियाँ पूरी नहीं होतीं,
वे रहस्य बनकर आत्मा में बस जाती हैं।
"Ashvika" ऐसी ही एक अनुभूति है—
एक नाम, एक एहसास,
एक छाया... जो दिखाई नहीं देती,
पर हर पल साथ चलती है।
ये कविताएँ केवल शब्द नहीं,
ये उन रातों की गूँज हैं
जहाँ चाँद भी सुनता था
और सितारे गवाह बनते थे।
यदि आपको इन पंक्तियों में
किसी अधूरे प्रेम की खुशबू मिले,
तो समझिए —
"Ashvika" ने आपको चुन लिया है।

लेखक की ओर से

कभी-कभी ख्याल बयाँ करके भी रहस्य रहते है,
और कभी छुपाकर भी अमर हो जाते है।
यह संग्रह उसी अमर एहसास की कहानी है।

– Deval

आरंभिक सूक्ति

“वो मेरा था भी... और नहीं भी,
शायद इसी का नाम ‘Ashvika’ है।”

या

“कुछ ख्याल दिल पर लिखे जाते हैं,
मिटाने से पहले वे हमें मिटा जाते हैं।”

अनुक्रमणिका

1. सुकून अलग हो सकता है 1
2. बिंदी 3
3. वक़्त लगता है.. 4
4. रूठ गया है मुझसे अक्स मेरा.................................... 5
5. किरदार बदल जाते 6
6. इश्क़नामा 7
7. Bandish thi toh maja tha 8
8. कर्म पर गर्व सा हुआ..10
9. सच की तलाश 11
10. वो निगाहें 12
11. तू खुली आंखो से एहसास छू ले 13
12. सुना है सुना लो..14
13. सबसे पहला दोस्त 15
14. अलग हर एक कहानी है 17
15. आज की नारी..18
16. नज़रिया 19
17. कलाकार 20
18. घर की छुट्टी... 21
19. फ़र्क़ पड़ता है.. 22
20. अलग रफ़्तार है 23
21. हसी और ख़ुशी 24
22. घर वापसी.. 25
23. पता चले तो... 26

24. शिकायत नहीं दरख्वास्त है 27
25. जनता हूँ.. 29
26. यक़ीन 30
27. परिस्थिति है पहचान नहीं 31
28. भाषा.. 32
29. मजबूर से मजबूत 33
30. क्यों हम देख पाते नहीं 34

1.
सुकून अलग हो सकता है

सुकून सैलाब हो सकता है,,
प्यासा तालाब हो सकता है,,

हो कर खुशनसीब कोई उदास भी हो सकता है,,
कोई देख कर ये तमाशा बेआवाज़ भी हो सकता है,,

नज़रअंदाज़ कर देते है हम, हर शख़्स का अलग मिज़ाज हो सकता है,,
किसी के लिये शोर ही है सुकून, किसी के लिये सुकून में शोर बेहिसाब हो सकता है,,

परदों पर परदे चढ़ा रखे है, तारीख़ बदलने पर अलग अन्दाज़ भी हो सकता है,,
जो ढूँढता है हर सवाल का जवाब, वो ख़ुद भी सवाल हो सकता है,,

बूँदो का धरती से घमासान, उसे विचित्र रफ़्तार में धो सकता है,,
ग़ुम हो जाये कोई गहरी नींद में, तो कोई सपनों में करवटें बदल कर खो सकता है,,

एक ही हवा से साँसे चुराने वाला हर किरदार, अपने सुकून की एक अलग माला पिरो सकता है,,
कोई क़ुबूल करले तेरी सोच को, तो कोई चुनौतियाँ दे कर तेरी सोच के ख़िलाफ़ भी हो सकता है,,

कभी

सुकून सैलाब भी हो सकता है,,
प्यासा तालाब भी हो सकता है,,

2.
बिंदी

कभी गुलाब देखा है, क्या कभी उठ कर नींद से कोई ख़्वाब देखा है,,
उस गुलाब की महक का रुबाब देखा है, उस ख़्वाब में एक चेहरा बार बार देखा है,,

महसूस हो हाथों में अपना सा किसी और का हाथ देखा है,,
अपनी लगाम को उसके हाथों की पकड़ के हिसाब से बदलते हुए बार बार देखा है,,

चेहरे हज़ारो देखे होंगे कभी तुमने उसको बिंदी के साथ देखा है,,
रंग भूल जाओ उसकी चुनरी का उसकी नज़रो की हया का हिजाब देखा है,,

जानते नहीं थे बचपने में क्या होता है इश्क़ कभी उसको उसके बचपने के साथ देखा है,,
ना बोले वो एक शब्द भी पर उसके होठों के हरकतों से उठ रहा मिज़ाज देखा है,,

चलते हुए वक़्त में थम जाये उसे पर नज़र ऐसा कोई शख़्स तुमने अपने आस पास देखा है,,
बदलते हुए लिबासों में मेरे आईने ने उसको हर बार उसकी बिंदी के साथ देखा है,,

3.
वक़्त लगता है

कुछ क़िस्सो को सुनाने में और कुछ को समझाने में,,
वक़्त लगता है एक डाल से दूसरी डाल तक जाने में,,

धूल के ग़ुबार से एक गहरी साँस चुराने में,,
तकलीफ़ ख़ुद को देकर ख़ुद की ताक़त बन जाने में,,

तेज़ रफ़्तार करके धीमी रफ़्तार की एहमियत दिखलाने में,,
वक़्त लगता है अपनी रफ़्तार को समझ पाने में,,

हवा के बदलते रुख़ में ख़ुद को खड़ा कर पाने में,,
कभी कदमों को रख कर कठोर तो कभी कदमों को आगे बढ़ाने में,

कभी मिल जाते है सहारे, कभी ख़ुद का सहारा बन जाने में,,
वक़्त लगता है इंसान की तकलीफ़ को समझ पाने में,,

4.

रूठ गया है मुझसे अक्स मेरा

रूठ गया है मुझसे अक्स मेरा मुझे कुछ बताता नहीं है,,
पूछता हूँ क्यों मुस्कुरा रहा है मुझे वो पहले जैसा नज़र आता नहीं है,,

ठोकर रस्तों पर लगती है तो मुस्कुरा देता है, ये मुझे मेरे जैसा ख़याल दिखाता नहीं है,,
धुन जो वो सुनके गुनगुनाने लगता है, ठहर जाती है वो सरगम मेरे कानों तक मेरे दिल उसको सुन पाता नहीं है,,

शक की आवाज़ो ने मुझे कर डाला है पागल, उसका चेहरा शिकन जताता नहीं है,,
संवारने लगा है बाल अपने फिर से, मेरी आवारेगी क्यों देख पाता नहीं है,,

देखने लगा है ना जाने कैसी आस को या शायद अपनी प्यास को, इसको पुरानी आदतें अब सताती नहीं है,,
कही हो तो नहीं गई इसको वो बीमारी फिर, भूख-प्यास भी मुस्कुराहट चेहरे से इसके हटाती नहीं है,,

सताया भी है डराया भी है फिर भी खुश है अक्स मेरा उसको मेरी याद आती नहीं है,,
चाहे देखे वो मुझे दुलार से पर बीती बातें मेरे दिल से जाती नहीं है,,

मरहम की लो जला देगी मेरी नफ़रत की मोम को, उसकी मुस्कुराहट बताती यही है,
कुछ यादें याद नहीं रखनी होती, उसकी आँखें जताती यही है,,

5.
किरदार बदल जाते

सोचता हूँ ज़िंदगी में मिले हुए किरदार बदल जाते,,
समाज़ के ये **औहधे** या परिवार से मिले हुए दबाव बदल जाते,,

मेरे हिस्से में हासिल हुई ये नयी आवाज़ के अल्फ़ाज़ बदल जाते,,
वज़न होता मेरे फ़ैसलों का, ये दुनिया वाले अगर मेरी बात समझ जाते,,

रुतबा होता रुआबदार, मेरी जिम्मेदारियों के नाम बदल जाते,,
अलग होता रास्ता मेरी मंज़िल का, मेरे लिये कुछ जज़्बात बदल जाते,,

रखता मैं मेरे हर एक रिश्ते का ख़याल, क्या बदले हुए किरदारों में वो मेरी बात समझ जाते,,
होती फिर भी मुझसे शिकायतें कुछ को, शायद कुछ इल्ज़ामो के नाम बदल जाते,,

नये इस किरदार को होती नयी परेशानियाँ, ना जाने उनसे हम कितने बदल जाते,,
निभा लेते हम हर रस्म को, पर क्या मेरी मुश्किलों के हालात बदल जाते,,

काश सोचता हर एक ये कहानी, तो उठे हर एक सवाल के जवाब निकाल पाते,,
जीवन कर लेते आसान अगर बस बैठ कर बीती बातों के हर जज़्बात, और उस से उठी हर अपने अंदर की आवाज़ निकाल पाते ,,

6.

इश्क़नामा

इश्क़ का इज़हार लिख लेते थे,,
प्रेम पत्र क्या हम प्रेम अख़बार लिख लेते थे,,

प्रेमिका को माशूक़ और माशूक़ को हमनवाज़ लिख लेते थे,,
मिलता था कोई ख़ाली कोना तो हम उसका नाम लिख लेते थे,,

पर तेरे इश्क़ की गवाही लफ्जो में बता नहीं पाते,,
हम हर लिखे हुए ख़याल को आवाज़ देकर सज़ा नहीं पाते,,

टूटे फूटे शब्दों को जोड़ कर हम तुम्हें खूबसूरत बताते है,,
नाकामयाब कोशिश में दिया है ख़ुद को तकल्लुफ़, ऐसे नज़र आते है,,

ये नदियाँ आसमाँ सितारे पहले भी थे और आगे भी मिल जाएँगे,,
हम खुशनसीब है जिस युग में तुमने जन्म लिया हम उस युग में जीवन बितायेंगे,,

क्या फुलो की कलियों से और सिनेमा की गलियों से हम तेरे लिये, कोई उदाहराण बतलाये ??
तुम हो सबसे अलग ये कैसे बताए, और जो हुआ ही नहीं इतिहास उसकी तारीफ़ो में शब्द कहा से लाये,,

दम घोट देती है जब ये ज़िंदगी, तब तेरा एहसास ही जीना सिखाता है,,
क्यों खोजती है शब्द मेरी जुबान से, राधा और कृष्ण के विवाह सा ये इश्क़ शब्दों से नज़र नहीं आता है,,

7.
Bandish thi toh maja tha

बंद थे दरवाज़े तो आज़ाद हो पाता थे,,
खोल कर चुपके से कुण्डी हम कोई और हो जाते थे ,,

ख़ास होता अगर डब्बे का पकवान तो **आधी** छुट्टी तक टिक नहीं पाता था,,
माँ से बनवा के लाने वाला बच्चा वो पकवान खा नहीं पाता था,,

कभी मोजे कभी काग़ज़ की गेंद बनाते थे,,
बिन बल्ले के खेले हुए दौड़ इतिहासिक हो जाते थे,,

बंदिश तोड़कर ख़ुद को ख़ास दिखलाता था ,,
ख़ुशी थी कोई ग़ुरूर नहीं समझता था पर समझा नहीं पाता था,,

बेच कर आज बचपन जवानी उधार पर उठायी है,,
कदमों का हिसाब ही नहीं ना जाने कहाँ कहाँ ठोकर खाई है,,

यूँ तो पैसे की गुल्लक में पैसा रुपया हो गया है,,
पर बंदिश वाला वो बचपन कही खो गया है,,

अब बल्ला उठा कर मैदान में चले तो जाते है,,
मैदान अपना सा नहीं रहा खेलने वाले कभी आते है कभी बहाने बनाते है,,

आज़ादी से हर जगह चले तो जाते है,,

पर हर बात पे थोड़ा कम मुस्कुराते है, बंदिश को याद करते है तो कभी
आँसू ख़ुशी के होते है कभी जी भर के हम दर्द सुनाते है,,

8.

कर्म पर गर्व सा हुआ

दर्द समझ कर समझदार दिखाना था,,
ये नाकाबिल दुनिया में ख़ुद को वफ़ादार बनाना था,,

जो सोचते भी नहीं थे मेरे साथी वो करके दिखाना था,,
हर उलझन सुलझा कर ख़ुद को असरदार बनना था,,

अपना हर छुपा हुआ किरदार सबको दिखाना था,,
हमे हर झख़्म के लिये ख़ुद को मरहम बनाना था,,

पता नहीं चला हम कब आग भुजाते हुए ख़ुद को जलाने लगे,,
हर झख़्म को धोते हुए ख़ुद को चोट लगाने लगे,,

कर्मों पर हुआ गर्व, तो बातों के तीरो से हुए घाव गहरे दर्द बन जाने लगे,,
मरहम ख़ुद को बना दिया और ख़ुद के मरहम से दूर जाने लगे,,

हर एक चाल को दिखाते दिखाते हम खो जाने लगे,,
कर्मों को गर्व सा देखते देखते, हम कर्मो के बंधन को अनदेखा कर गर्व की बेडियो में क़ैद हो जाने लगे,,

9.
सच की तलाश

मेरे सच की तलाश ख़ास हो गई,,
तू मेरे आस पास से मेरा इतिहास हो गई,,

खुशनुमा सी होगी कहानी लगता था, पर ज़िंदगानी हमारी उदास हो गई,,
ढूँढता रहा मैं ख़ुद में तुझको, तू खो के भी इतनी ख़ास हो गई,,

जो थी हर रोज़ की आदत, उसकी छाप मेरी याददाश्त हो गई,,
सांसों के ज़रिए जो धड़कन चली थी ढूँढने मुझे, वो भी हताश हो गई,,

उठता हूँ हर रोज़ किसी ख़्वाब से, सुकून की नींद अब कारावास हो गई,,
किसको बनाऊ गुनहगार, मेरी रूह उसके साथ खो गई,,

तू मेरे आस पास से जब मेरा इतिहास हो गई,,
मेरे सच की तलाश ख़ास हो गई,,

10.
वो निगाहें

वो निगाहो की गहराईया इंतज़ार बता रही है,,
चुप रहती है ज़ुबान, थक चुकी है या कोई राज़ छुपा रही है,,

धड़कन की रफ़्तार मन में उठी हलचल बता रही है,,
ना जाने कौन लेकर जाएगा अपने बसेरे, ये उलझन सता रही है,,

उलझी हुई बातें सुख से ज़्यादा दुख में बीते हुए साल बता रही है,,
हस्ती है तो मानो हर दर्द पर मरहम की खिल खिलावट बिछा रही है,,

ख़ाली बेठ कर देखती है कुछ तो खो सी जा रही है,,
ना जाने कितने काम ख़त्म कर दिये है पर कुछ बिखरा हुआ आये नज़र तो
समेटने के लिए दौड़ लगा रही है,,

वो निगाहो की गहराईया इंतज़ार बता रही है,,
जानती है कुछ लौट के नहीं आता फिर भी दूसरों की ख़ुशियों के लिये
जीते हुए जीना सिखा रही है

11.

तू खुली आंखो से एहसास छू ले

है तेरे पास तू जानता नहीं, तू अपनी ख़ुशनसीबी पहचानता नहीं,,
लगते है ताने लगती है बंदिश, तू मिल रहे आशीर्वाद को कुछ मानता नहीं,,

बादलों के पीछे समाँ तो देख, बारिश से धूल रही तेरी दुनिया को तू देखता है पर पहचानता नहीं,,
ढूँढता है तू तारों की चमक, तेरे लिये जल रहे सूरज की तड़प को कुछ मानता नहीं,,

भीड़ मैं बज रही है तालियाँ, जिसकी आँखों में आँसू है तू उसकी ख़ुशियाँ पहचानता नहीं,,
लगती है जमाने सलाह दुआ सी, उठी है जिनकी दुआ सिर्फ़ तेरे लिए उनको कुछ मानता नहीं,,

खोल कर देख तो लेता है तू दुनिया, तेरे लिये क़ुर्बान हुए ना जाने कितने ख़्वाब तू पहचानता नहीं,
छू लेता है तू अपनी हर ख़्वाहिश, अपनी ख़ुशनसीबी को कुछ मानता नहीं,,

तेरे सामने है तेरे अपने, तू अकेले हुए घरों को पहचानता नहीं,,
जो लग रहा है बोझ तुझे, तेरी नींव वही है तू मानता नहीं,,

12.
सुना है सुना लो

कोई दिल में है ख़ुशी, कोई दिल में है ग़म, उसको दिखा लो,,
वक़्त रहते कोई सुन रहा है,तो अपनी बात सुना लो,,

जज़्बात खुल के बयान तक नहीं कर पाओगे,,
अपना दिल ए हाल लफ्जो तक नहीं ला पाओगे,,

उठेगा जब सैलाब तो दो पल के लिये रो भी नहीं पाओगे,,
अपनी जंग लड़ने के लिए हथियार भी उठा नहीं पाओगे,,

ख़िलाफ़ नहीं बस साथ नहीं होगा कोई अपना ये जान लो,,
बस मजबूरियों से लड़ना होगा तुम्हें इसलिए ख़ुद को पहचान लो,,

वक़्त रहते कोई सुन रहा है तो अपनी बात सुना लो,,
सब्र से जो साथ देने वाले है उनको गले लगा लो,,

13.
सबसे पहला दोस्त

आँख मिचौली सा खेल बना दूँ क्या ,,
हज़ारो मुलाक़ातें लगी, ऐसा एक मेल दिखा दूँ क्या,,
अपने सबसे पहले दोस्त से मिलवा दूँ क्या,,

खुली थी जब आँखें पहली दफ़े उसको सामने ही पाया था,,
बचपन में बस्ता थमा दिया था और खूब डराया था,,
जवानी के लड़कपन में हमनें भी उसको खूब नचाया था,,

अपनी सोच के मुक़दमों में लगायी खूब दलीले, जब लगा
डर तो आधा सच भी छुपाया था,,
जब हुए जादू ज़िंदगी में, उसके ही साये में वो पल बिताया था,,
मेरे सबसे पहले दोस्त ने जमाने से लड़ना और बेउम्मीद परवाह करना
सिखाया था,,

कहो तो सारे उसके राज बता दूँ क्या,,
दोस्ती को रिश्तेदारी में बदलते देखा होगा आज रिश्तेदारी को दोस्ती में
बदलने का राज़ सिखा दूँ क्या,,
आपके अपने महादेव से मिलवा दूँ क्या,,

बना दे रास्ते चीर के पहाड़ ऐसा भी कोई माँझी ना खुदको उसने दिखाया था,,
पर सही को सही और ग़लत को ग़लत समझना मुझे बताया था,,
और समय हो चाहे कितना भी ग़लत, उसको सही करने का सब्र मुझे
सिखाया था,,

कभी भक्ति तो कभी अपने अंदर की शक्ति से मुझे वाक़िफ़ करवाया था,,
मुलाक़ातें लगी हज़ारो तब जाकर में अपने सबसे पहले दोस्त से मिल पाया था,,

14.
अलग हर एक कहानी है

हर एक का अलग है लहज़ा, हर एक की अलग है कहानी,,
किसी के लिये गहरा है कुँआ, किसी के लिये उसमे थोड़ा ही है पानी,,

अलग है किस्से हर एक के, हर किस्से की अलग है ज़बानी,,
किसी के लिये शोर है वो सुबह की चहल पहल तो किसी के लिये वही शोर है ज़िंदगानी,,

अलग है चाय का स्वाद, अलग उसमे है डुबोयी हुई क़ुर्बानी,,
किसी के लिये है मौसमीं शौक़, किसी के लिये नींद उड़ाने वाली है ये औषधि पुरानी,,

अलग है त्यौहारों का शोर, अलग उसमे पोशाक है सिलवानी,,
किसी के लिये है वो बस छुट्टी का एक दिन, किसी को उसमे छुपी आस्था है निभानी,,

अलग है अपनों का सहारा, अलग उसमे है जिम्मेदारिया निभानी,,
किसी के लिये आफ़त है माँ बाप का साया, किसी के लिए यही लम्हा है एक मेहरबानी,,

अलग है नज़रिया सबका, अलग है हर दर्जे की सावधानी ,,
किसी के लिये ज़हर है एक बूँद का कतरा, किसी को बरसात के भरोसे ही अपनी बेटी की डोली है उठानी,,

15.
आज की नारी

सुरमा भी है लाली भी है, कमर उसकी लचक वाली भी है,,
थोड़ा ख़ुद से लड़ती है थोड़ा ज़माने से,ये लोहा उठाने वाली भी है,,

झुमके भी है पायल भी है, हर ज़ेवर को सज़ाने वाली है,,
उड़ाती भी है बचाती भी है, ये आभूषण को पूँजी बनाने वाली है,,

चुप भी है चिल्लाती भी है , आंसू देख कर आंसू छुपाने वाली भी है,,
रह कर अकेले भी परिवार के साथ घुल जाती है, ये ख़यालों को नया
दिखाने वाली भी है,,

नौकर भी है मालिक भी है, काम को कर्म दिखाने वाली है,,
झुकती भी है झुकाती भी है, ये अर्थव्यवस्था जमाने वाली है,,

कम भी है ज़्यादा भी है, हक़ कमाने वाली भी है,,
थोड़ा बदल देती है रास्ते थोड़ा मंज़िल बदल देती है, ये तोड़ कर बंदिश चाँद
पर जाने वाली भी है,,

16.
नज़रिया

अलग तो है कुछ बात, क्यों सबके होते है अलग ख़यालात ,,
कभी थोड़े में मिल जाती है उदासी, कभी बहुत में भी छलक पड़ते है आंखो से प्रेम आभास ,,

एक जैसी सबकी आदत नहीं, पर ये भी तो कोई आफ़त नहीं,,
शुरुवात में कुछ दिखलाते नहीं, और अंत में बयाँ कुछ कर पाते नहीं,,

तक़दीर कहता है कोई, तो कोई मेहनत कह कर हालत को समझाता है,,
नज़रिया सबका अलग है, कोई समझता है तो कोई समझ नहीं पाता है,,

किसी को धूप पसंद है किसी को छाव,,
किसी को दिन पसंद है किसी को रात,,

रंग से लेकर लिबास तक पहचान का मिज़ाज समझाते है,,
ख़ुद के नज़रिए से अक्सर ग़लत की अदालत में वक़्त बिताते है,,

किसको कहे ग़लत कभी कभी ख़ुद ग़लत नज़र आते है,,
नज़रिया है जनाब हम ख़ुद को शक और हक़ीक़त की दहलीज़ पे खड़ा पाते है,,

17.
कलाकार

बेख़बर सा हर पहर कर देते है, खबर में रहने के लिए ठहर को भी क़हर कर देते है,,
होश में रहकर भी बेसब्र दिखाते है, ना जाने कब कौनसे किरदार को ज़िंदगी बनाते है,,

मिट्टी से सोना बना देते है, कुछ लोग हाथो से जादू दिखा देते है,,
बेजान कहानियों में जान डाल देते हैं, भूल कर अपने अहम के सवालो पर पूर्ण विराम लगा देते हैं,

दुनियादारी के डर की शिक्षा तो सबको बराबर ही सुनाई है,,
भूख से बेबस हुई लाचारी भी सड़को पर सबको नज़र आयी है,,

कैसे फिर ये क्रांतिकारी भूलकर अपनी क्रांति अपने विचारो में शांति डाल देते हैं,,
चल रही अपने अंदर एक आग पर पसीना, तो कभी आँसुओ में सना पानी डाल देते हैं,,

कभी दौलत तो कभी अपने लिए मिली मोहलत के भरोसे सफ़र चला देते है,,
कलाकार की भी कलाकारी देखो, कभी चार तो कभी हज़ार की महफ़िल को हमसफ़र बना देते है,,

18.
घर की छुट्टी

निकलते थे घर से तो कुछ और बन जाते थे ,,
कही दिल तो कही ज़बा लड़ाते थे,,

जोश आज़ादी का बेशुमार लगता था,,
हर शक्स अपनी कहानी के ख़िलाफ़ दिखता था ,,

यूँ ही सोचते थे जब छूटा था बचपन और हम जवान हुए थे,,
लड़ झगड़ के एक टहनी से अपनी जड़ पे खड़े इंसान हुए थे,,

कुछ सपनों को हक़ीक़त भी बना दिया,,
बड़े बड़े शहरों ने किराए पर रहना सीखा दिया,,

अब जाते है अपने गांव तो सब अनजान नज़र आता है,,
जिन गलियों के राजा हुआ करते थे, वहाँ मेरे ही नाम सा कोई और हुकूमत चलाता है,,

काश वो बचपन की क़ैद वापस मिल जाती,,
खेलता में मेदानों में खाने के लिए माँ दूर से चिल्लाती,,

काश त्योहारों पे मिलने वाली छुट्टी लंबी मिल पाती,,
ना छूटता घर ना घर की इतनी याद आती,,

19.
फ़र्क़ पड़ता है

कहते हो नरम हो तुम और कठोर हूँ मैं,,
जिसको दिल दिया है वो चोर हूँ मैं,,

सुकून हो तुम और तक्लीफ़ हूँ मैं,,
तेरे हर आंसू पर हारी हुई दलील हूँ मैं,

तुम सोचते हो सबका और मतलब भरा स्वार्थ हूँ मैं,,
दुख के समंदर में ले जाता हुआ पार्थ हूँ मैं,,

फ़र्क़ पड़ता है,,

मैं मर्द हूँ जो अपनी हस्ती दिखा नहीं पाता,,
अपनी बात को नरम अन्दाज़ से समझा नहीं पाता,,

अपने उपर उठे सवालो के जवाब बता नहीं पाता,,
भीड़ में खुदको अक्सर हंसा नहीं पाता,,

किए कर्मों को या नाजायज़ क़समों को निभा नहीं पाता,,
फ़र्क़ पड़ता है और मैं , जता तक नहीं पाता,,

20.

अलग रफ़्तार है

तकलीफ़ भी देगा बेक़रारी भी होगी हर दिन नयी नयी बीमारी भी होगी,,
कुछ रोज़ बीतेंगे इस रिश्ते में तो ये नौकरी सरकारी सी भी होगी,,

माँ को ये तसल्ली है की इज़हार हो गया है,,
किसी को फट से किसी को समय लगा पर प्यार हो गया है,,

झगड़ा खतम होगा एक तो दूसरा कुकर पे चढ़ाया जाएगा,,
पर बिना उसे अपने दिन का हाल कहे दिन भी तू कैसे बिताएगा,,

क्या और क्यूँ के सवालों में उलझ के तुम दाँतो को दबा के भूचाल अपने अंदर का छुपा लोगे,,
उसके इंतज़ार में घंटो अपने मोबाइल पे कुछ ना कुछ चला भी लोग़े,,

पर होकर अकेले उसको ही साथ अपने तुम पाओगे,,
कच्चे रिश्ते तो मिलेंगे हज़ारों पर उसके जैसा साथ नहीं ढूँढ पाओगे,,

पूछेगा कोई दोस्त हाल तुम्हारा तो जवाब से पहले उसकी अदाओं को बंद आँखें करके अपने आगे चला लेना,,
फिर बोले जो दिल उसको ज़बान से देके हर्फ़ बता देना,,

21.
हसी और ख़ुशी

गुमशुदा जवानी में तलाश क्या करे,,
मिलते है लोग सवालो के साथ तो बात क्या करे,,

वहम में जीते है असलियत से सवाल क्या करे,,
क़ीमत लगाने लगता है जमाना रिश्तों में हिसाब क्या करे,,

नक़ाब टूट कर बदल जाते है किरदार यारों के साथ, छुपा नहीं पाते हम अपने जज़्बात क्या करे,,
बचपन से होती है मुलाक़ात भरी जवानी में जनाब हम शरमों लिहाज़ क्या करे,,

यूँ रुकती नहीं नादानियाँ, किसपे रोये किसपे चिल्लाए इतने है मिज़ाज क्या करे,,
बिन पिए झूम जाता है जमाना हमारा, लोगो के बेतुके उठते सवालों का नहीं है जवाब क्या करे,,

जो लग जाये दुनिया के मुँह से निकली हुई गाली, वो लगे ना अहम पे ऐसी यारी में पक्षपात क्या करे,,
गुमशुदा जवानी में लड़कपन की सहेलियों की जब आती है याद तो यादों के साथ जी कर खुदको उदास क्या करे,,

22.
घर वापसी

घर वापिस का एहसास सबसे ख़ास होता है,,
दिवाली के दिन घर में ही सारा संसार होता है,

दूर जाने के सपने चाहे साल भर बना ले,,
कभी काम की जिम्मेदारी कभी फ़ासलों के बहाने बना ले,,

पर दिवाली के दिन घर की चोखट में जश्न हमेशा ख़ास होता है,,
घर की बनी गुजिया और पटाखे की गूंज में क्या बताये क्या स्वाद होता है,,

बड़ो का आशीर्वाद और छोटों के साथ मिलकर लगाए दीयों से प्रकाश बेहिसाब होता है
दिवाली के दिन घर की रज़ाई में जागना स्वर्ग के समान होता है,,

23.
पता चले तो

पता चले तो ये बात बता दूँ,,
अपने लफ़्जो के जज़्बात बता दूँ,,

तुम्हारी पसंद की सुबह हो तो खिड़कियों पर पर्दों से बनी रात हटा दूँ,,
जो तुमको ना हो पसंद उस हर बहस से अपने अल्फ़ाज़ हटा दूँ,,

साथ तेरा होता है मैं ख़ुद को भूल जाती हूँ,,
बता भी नहीं सकती सबको इतना तुमको चाहती हूँ,,

तेरी बातो के आगे, हर आवाज़ को शोर सा बताती हूँ,,
मैं तेरी आँखों में जब देखती हूँ खो सी जाती हूँ,,

इश्क़ में उलझी बीती उमर को बस एक याद बता दूँ,,
आगे आने वाली ज़िंदगी को सिर्फ़ तेरा साथ बता दूँ,,

पता चले तो ये बात बता दूँ,,
अपने लफ़्जो के जज़्बात बता दूँ,,

24.

शिकायत नहीं दरख्वास्त है

जलता है धूप में फिर भी छाया दे जाता है,,
अपनी ही भूख से लड़ने के लिए धरती से दूर चला जाता है,,

हर पत्ता उसका साथ छोड़ कर मिट्टी में मिल जाता है,
पानी की बूँदे ना मिले तो प्यासा मर जाता है,,

तेज़ हवाओं के दबाव में झुक जाता है,,
ना मिले मिट्टी का साथ तो ज़िंदा नहीं रह पाता है,,

वहीं देखो मिट्टी को —

अकेली हो जाये तो कहा टिक पाती है, हवा पानी हर छोटी बड़ी हरकत उसको हिलती है,,
ना मिले उसको पत्तो का साथ तो बंजर हो जाती है,,

बिन छायाँ पथर से कंकड़ और कंकड़ से धूल हो जाती है,,
जीवन का हर पदार्थ उसमे है, पर बिना पेड़ के वो बंजर बेजार कहलाती है,,

कट ते हुए पेड़ की चीख, उसकी आवाज़ तक नहीं बन पाती है,,
ढूँढ लेती है मिट्टी नये पेड़, कभी बवंडर तो कभी आँधी से अपनी तन्हाई दिखलाती है ,,

जंगल जब ख़ाली मैदान होता है, मिट्टी के लिये लड़ने वालों का सैलाब होता है,,
कटे हुए पेड़ ले लिये अंत ही पूर्ण मिलाप होता है ,,

टूट कर वो पहले जुदा और फिर फ़ना हो जाता है,,
चीख को आवाज़ तक नहीं मिलती वो कुछ कह नहीं पाता है,,

ये शिकायत नहीं दरखास्त है,,
मिट्टी की वकालत करने वालों को बताना है कि पेड़ की भी यादस्त है,,

25.
जनता हूँ

वो निकलती है सफ़ेद कुर्ती और सफ़ेद सलवार में तो
खला तो नहीं है उसकी इबादत में हिफ़ाज़त को अपना बताना,,
वो निकलती है सफ़ेद कुर्ती और सफ़ेद सलवार में तो अंजुमन को उसका मुरीद हो जाना,,

पहले से तो ज़माना जानता है उसकी अदाकारी,,
क़ुर्बत हो उनसे असल में तो क़ुर्बान भी हो जाना,,

जानता है ज़माना उनको उनके हुस्न के दीदार से,,
मेरे लिए वो कोई और है,मुझे अपने हर्फ़ ए अन्दाज़ से उन्हें है बताना,,

सज धज के देखता है उनको ज़माना हर रात चाँदनी की तरह,,
मेरे लिए तो बस इतना काफ़ी है की चाँदनी में उनका दीदार हो जाना

लिबास ए मुफ़लिस हो जाता है अक्सर उनको अपना हाल बताना,,
खला है भी नहीं और है भी किसी को अपने सारे जज़्बात से मिलाना ,,

खला - गलती
अंजुमन - महफ़िल
मुरीद - चाह ने वाले
कुर्बत - नज़दीकियाँ
हर्फ़ ए अन्दाज़ - अपने शब्दों
चांदने - पहली सूरज की रोशनी का वक़्त
लिबास ए मुफ़लिस - नाकामयाब

26.

यक़ीन

बताया था कि बदलती ऋतु के साथ सब बदल जाना है,,
यक़ीन कर, पड़ी है बर्फ जहां वहाँ धूप को भी चमचमाना है,,

एक बात से मुलाक़ात तक और मुलाक़ात से साथ तक बस तुझे यही सफ़र निभाना है,,
चलती है दुनिया अपनी रफ़्तार से, चलते चलते सबको चले जाना है,,

अपनों को चुन चुन के क़रीब लाना है, बदलती तारीख़ों के साथ जिनको बदल नहीं जाना है,,
हर रिश्ते की एहमियत समझ कर कुछ के क़रीब तो कुछ से दूर हो जाना है,,

किसी तथ्य की तरह यक़ीन को, क्यों इतना मुश्किल समझ पाना है,,
किसी पे थोड़ा यक़ीन निभाने के लिए, क्यों आख़िरी सांस तक रिश्तों को डगमगाना है,,

हर युग में बदलती है सियासतें, आज के राजा को कल रंक हो जाना है,,
जब पहचान तक की औक़ात नहीं तो तुझे अपने यक़ीन को मज़बूत बनाना है,,

27.
परिस्थिति है पहचान नहीं

कोई रावण नहीं कोई राम नहीं,,
कोई पहले नहीं कोई उसके बाद नहीं,,

रोशन तो बहुत हुए सितारे, पर सूरज सा कोई आबाद नहीं,,
कभी पूरे से लगे कभी अधूरे, पर कोई चंद्रमा सा उदास नहीं,,

आते है त्यौहार हर साल, हर होली और दिवाली हमारे लिए यादगार नहीं,,
मौसम के अलग है दिन देखो तो कभी उतनी धूप नहीं और कहीं लगातार बरसात नहीं,,

थक जाते है कभी दो कदम चलके, कहीं लंबे सफ़र मे जज़्बा हताश नहीं,,
बदल देते है कभी शहर यारों के लिए, कहीं एक घर बदलना भी आसान नहीं,,

आज जो उपर है ज़माने की नज़र में, वो भी कोई भगवान नहीं,,
जो गिर गया है नीचे इस भाग दोड़ में, वो भी ज़िंदा है अभी राख नहीं,,

सिर्फ़ शरीर जाता है मसान, उसका हर एक ख़याल नहीं,,
राख हो जाती है ज़मीन, पर मिट्टी खोती उसकी जान नहीं,,

आज की परिस्थिति यूँ तेरे साथ नहीं,,
पर ये परिस्थिति ही कोई तेरी पहचान नहीं,,

28.
भाषा

कोई इशारो से सवाल उठाता है, कोई निगहों के किनारों से बिन बोले सब कह जाता है,,
कभी ख़ुशी में कोई पागल हो कर चिल्लाता है, कभी कोई ग़म में आंसू छुपाता तो है पर छुपा नहीं पाता है,,

हर शब्द अलग है उसके पीछे के जज़्बात अलग है,फिर भी जो जानता नहीं दूसरे की भाषा, वो उसका एहसास समझ जाता है,,
हर कहानी वही इतिहास बताती है फिर भी अपनी बोली में ही इंसान उसके पीछे छुपे जज़्बात समझ पाता है,,

सरहद की लकीर तो नाम भर की है, हमे मुंह से निकली बोली ने बाँट रखा है,,
सार कहानी का वही होते हुए भी किरदारो की हिस्सेदारियों को काट रखा है,,

हाव भाव हर मुश्किल का इलाज सिखा देता है, प्रेम हो या प्यास सब मिटा देता है,,
कैसे ना जानते हुए ख़याल, एक बच्चा दूसरे को अपने पास बैठा लेता है,,

रामायण गूंजे चाहे अवध के चोबारो में या तमिल के गलियारों में, जिता कर राम को हम रावण को हारता हुआ दिखलाते है,,
फिर भाषा अलग होते ही एक पथ पर चलने वालों को, किसी दोड़ के हिस्सेदार सा क्यों बताते है ??

29.
मजबूर से मजबूत

कोई गया मंज़िल तक चलते चलते,,
किसी के दर पे मंज़िल ख़ुद आ गई,,

कोई दर्द में हुआ हताश शामो के ढलते ढलते,,
किसी को देदी दर्द ने ताक़त जो उसके रूह में समा गई,,

ये ज़िन्दगी नहीं कोई जंग, जो जितने वाला कोई इनाम का हक़दार बनेगा ,,
दर्द को अपने बड़ा बताने वाले को, कोई ख़िताब थोड़ी मिलेगा ,,

कोई दर्द से लड़कर शैतान बना है, तो कोई उस ही दर्द में इंसान बनेगा ,,
चुनी है किसी ने नफ़रत की राह, तो किसी को हमदर्दी का समाधान मिलेगा,,

दर्द तेरा कम नहीं पर उसके साथ जीना भी कोई हल नहीं,,
दर्द में जीने वाले के पास होते हुए भी आनंद का पल नहीं,,

तू बस चलता रह एक रोज मंज़िल भी मिल जाएगी,,
राहत को चुन, तसल्ली मिलेगी तो सुबह रंगीन हो जाएगी,,

30.

क्यों हम देख पाते नहीं

अगर सफ़र की कहानी कोई दिखाता नहीं तो मुझे मेरा सफ़र नज़र आता नहीं,,
जो लगती थी एक जैसी रफ़्तार सबकी, उसमे लगने वाले ज़ोर कोई देखे बिना समझ पाता नहीं,,

उड़ने से पहले दौड़ना सीखो ये ज्ञान तो सब सीखते है, पर दौड़ने के लिये चलना कोई सिखाता नहीं,,
गिरे है हज़ारो दफ़ा सिर्फ़ कुछ कदम चलने के लिए ये जानते सब है, पर कोई इसका महत्व जताता नहीं,,

जब मिलता है अपनों का सहारा तो ढलान सी पकड़ लेती है ज़िंदगी रफ़्तार, रोकना चाहो तो भी रोक पाता नहीं,,
वही ज़िमेदारियाँ आती है कंधों पर बन के आस, तो कितना मुश्किल है चढ़ना उस ढलान पर ये सोच पाता नहीं,,

हर शख़्स जो खड़ा है साथ मेरे उस क़ाबिलियत की मंडी में, देखने पर फ़र्क़ किसी में कोई ख़ास दिख पाता नहीं,,
हालात किसी का मंज़िल से उसकी कैसे पहचान लेता है जमाना,
तकलीफ़ की एहमियत क्यों कोई सिखाता नहीं,,